

डॉ .वंदना शर्मा

दिल्ली

रिश्तों का बाज़ार

सुमन मुंबई से दो दिन के थका देने वाले सफर के बाद अपने मायके चांदपुर पहुंची थी| पूरा रास्ता उसके दिल में एक ही अरमान था| भाभी के लिए चूड़ियों का सुंदर सेट, भतीजी के लिए नए कपड़े, कंगन और फ्रॉक| सोच रही थी, भाभी देखकर खुश हो जाएगी, गले लगाएगी, कहेगी - दीदी तुम कितना याद रखती हो|

पर दरवाजा खुलते ही सपना टूट गया| भाभी प्रिया ने उसे देखते ही माथा पकड़ लिया| पति से बोली, "अब दीदी आ गई हैं, वही खिलाएंगी बना के सबको| मैं चली अपने कमरे में, सुबह से वीडियो नहीं बनाई, मुझे वीडियो बनानी है|"

सुमन का उत्साह वहीं ठंडा पड़ गया, फिर भी उसने मुस्कुराते हुए बैग से उपहार निकाले| "भाभी, ये आपके लिए..."

प्रिया ने बिना देखे ही ठंडे स्वर में कहा, "अरे दीदी, क्या जरूरत थी लाने की| अब लाई हो तो लाओ, रख देती हूँ|" और उपहार लेकर अपने कमरे में चली गई|

सुमन बेचारा सा मुँह लिए रसोई में चली गई| उसने ही सबके लिए खाना बनाया, सबको खिलाया| रात में सब एक साथ बैठे तो प्रिया ने कहा, "दीदी, सुबह जल्दी राखी बांध देना, मुझे भी अपने मायके जाना है राखी बांधने|"

"जी भाभी, मैं जल्दी उठ जाऊंगी," सुमन ने धीरे से कहा|

अगली सुबह सुमन सबसे पहले उठी| नाश्ता बनाया, भैया-भाभी दोनों को राखी बांधी, आरती की| प्रिया जाने के लिए बैग उठा ही रही थी कि फोन बज उठा - प्रिया के भाई का फोन था| "शाम तक आना प्रिया, मैं तेरी भाभी के साथ उसके मायके जा रहा हूँ| शाम तक आएंगे हम दोनों|"

बस, प्रिया का मूड बिगड़ गया| वह गुस्से में पैर पटकते हुए सीधे अपने कमरे में चली गई| बाहर हॉल में सन्नाटा छा गया|

तभी सुमन ने धीरे से माहौल संभाला, "कोई बात नहीं भैया, आप भी आराम कर लो| भाभी आप भी आराम करो, मैं सबके लिए खाना बना देती हूँ|"

सुमन ने फिर सबके लिए खाना बनाया, सबको हँसी-खुशी खिलाया| प्रिया फिर से ज़िद करने लगी जाने की तो सुमन ने अपने भाई से कहा भैया आप जाओ मैं हूँ न यहां मम्मी पापा के पास मैं संभाल लूंगी यहां| उनको विदा कर सुस्ताने के लिए अपनी मम्मी के पास बैठी ही थी| इसी बीच सुमन की बुआ जी भी आ गईं| सुमन ने उनका भी बड़े प्यार से स्वागत किया, उनके लिए चाय-नाश्ता बनाया| पूरा दिन वह रसोई और घर संभालती रही, पर किसी ने ये नहीं पूछा कि दीदी तुम थक गई हो, दो दिन के सफर से आई हो|

रात में सुमन अपने पिताजी के पास बैठी और बोली, "पिताजी, अब मैं कल चली जाऊंगी| बेटी की परीक्षा चल रही है, उसकी तैयारी करवानी है|"

पिताजी ने उसकी आँखों में थकान देख ली थी, बोले, "ठीक है बेटा, जैसा तुझे ठीक लगे|"

अगले दिन सुबह सुमन ट्रेन में बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी| आँखों में आंसू थे, पर दिल में एक सच्चाई उतर आई थी|

वह सोच रही थी - त्योहार अब त्योहार नहीं रहे| रिश्ते अब रिश्ते नहीं रहे| सब कुछ एक बाज़ार बन गया है| जरूरत के हिसाब से रिश्तों का मान होता है| जो दिल से निभाता है, वही आखिर में अकेला रह जाता है| मायका भी अब वो मायका नहीं रहा जहाँ बेटी रानी बनकर आती थी|

ट्रेन चल पड़ी थी, चांदपुर पीछे छूट रहा था, पर सुमन ने मन में तय कर लिया था - वह रिश्ते निभाना नहीं छोड़ेगी, पर अब उम्मीद रखना छोड़ देगी|